

## वर्ष 2047 तक 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का भारत का लक्ष्य

यह एडिटरियल 07/08/2024 को 'द हट्रि' में प्रकाशित [“Powering up to get to the \\$30-trillion economy point”](#) लेख पर आधारित है। इसमें वर्ष 2047 तक 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के भारत के लक्ष्य की चर्चा की गई है, जिसके लिये नमिन-कुशल वनिरिमाण को बढ़ावा देने, महिला श्रम भागीदारी को बढ़ाने और संरक्षणवादी नीतियों से बचने के रूप में मध्यम-आय जाल से बाहर निकलना आवश्यक है। लेख में इस बात पर बल दिया गया है कि सतत विकास के लिये अवसरचना में सुधार करना और बाज़ार संचालित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।

### प्रलिमिस के लिये:

[उदारीकरण के बाद की अर्थव्यवस्था, आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24, लॉजिस्टिक प्रदर्शन सूचकांक 2023, श्रम बल भागीदारी, अनुसूचित वाणजियिक बैंक, गति शक्ति योजना, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण, जन धन योजना, पंचामृत, सौर मशिन, राष्ट्रीय पवन-सौर हाइब्रिड नीति, भारतीय दवाला और शोधन अक्षमता कोड।](#)

### मेन्स के लिये:

समावेशी और सतत विकास के लिये भारतीय अर्थव्यवस्था में वृद्धि का महत्त्व।

भारत की आर्थिक वृद्धि पर किसी समीक्षा में प्रायः एक अतिशय आशावादी स्वर या वजियोनमाद प्रकट होता है। भारत की प्रभावशाली 7% से अधिक जीडीपी वृद्धिदर और वैश्विक स्तर पर सबसे तेज़ी से विकास करती वृहत अर्थव्यवस्था के रूप में इसकी स्थिति के साथ माना जाता है कि भारत की आर्थिक उन्नति अपरहार्य है। हालाँकि, ऐसी ऐतिहासिक मसालें मौजूद हैं जो दिखाती हैं कि कई देश इसी स्तर तक पहुँचने के बावजूद वकिसति राष्ट्र का दर्जा प्राप्त करने में वफिल रहे। वर्ष 2047 तक 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के सरकार के स्वप्न को साकार करने के लिये भारत को उदार आर्थिक नीतियों के माध्यम से तीव्र आर्थिक विकास बनाए रखना चाहिये और नजि क्षेत्त्र की क्षमता का दोहन करना चाहिये।

जबकि भारत वर्ष 2047 में अपनी स्वतंत्रता का शताब्दी वर्ष मनाने की ओर अग्रसर है, वकिसशील से वकिसति अर्थव्यवस्था में परणित होने का इसका स्वप्न चुनौती और अवसर दोनों प्रस्तुत करता है। वविधितापूर्ण और गतिशील आर्थिक परदृश्य के साथ, भारत को इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये गंभीर चुनौतियों का समाधान करते हुए अपनी क्षमता का लाभ उठाना चाहिये। यहाँ नवीनतम डेटा और अनुमानों से समृद्ध एक वसितृत रोडमैप प्रदान किया गया है, जहाँ बताया गया है कि भारत वर्ष 2047 तक किस प्रकार एक वकिसति अर्थव्यवस्था में परणित हो सकता है।

## वर्ष 2047 तक वकिसति अर्थव्यवस्था का दर्जा हासिल करने की राह की चुनौतियाँ:

### ■ गरीबी और असमानता:

- वर्ष 1947 में स्वतंत्रता से लेकर वर्ष 1991 तक गरीबी कम करने के उद्देश्य से समाजवादी नीतियों के क्रयान्वयन के बावजूद भारत की गरीबी दर 50% के आसपास बनी रही।
- हालाँकि, [उदारीकरण के बाद \(1991-2011\)](#) गरीबी लगभग 20% तक कम हो गई, जहाँ 350 मिलियन लोग गरीबी से बाहर आ गए।

### ■ मध्यम-आय जाल:

- वशिव बैंक की परभाषा के अनुसार, मध्यम-आय जाल (Middle-Income Trap) से तात्पर्य ऐसी स्थिति से है, जिसमें एक मध्यम-आय देश बढ़ती लागत और घटती प्रतस्पर्द्धा के कारण उच्च-आय अर्थव्यवस्था में परिवर्तित होने में वफिल रहता है।
- भारत के लिये भी मध्यम-आय जाल में फँसने का खतरा है, जहाँ देश मध्यम-आय से उच्च-आय की स्थिति में पहुँचने में वफिल हो जाते हैं।
- वर्ष 1960 में 101 मध्यम-आय अर्थव्यवस्थाओं में से केवल 23 ही वर्ष 2018 तक उच्च-आय अर्थव्यवस्था बन सके।
- ऐसी आशंकाएँ व्यक्त की जाती हैं कि वकिसति अर्थव्यवस्था की राह पर आगे बढ़ते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था मध्यम-आय जाल में फँस सकती है। माना जाता है कि 5,000-6,000 अमेरिकी डॉलर प्रतिव्यक्त आय तक पहुँचने के बाद यह अधिक तेज़ी से आगे नहीं बढ़ पाएगी।

### ■ वृद्ध होती आबादी:

- भारत की आबादी, जो वर्तमान में लगभग 1.4 बिलियन है, वर्ष 2048 तक 1.64 बिलियन के सर्वोच्च स्तर पर पहुँचने के बाद बाद वर्ष 2100 तक घटकर 1.45 बिलियन रह जाएगी।
- इसके परिणामस्वरूप, भारत को वृद्ध होती आबादी से जुड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, जिसमें स्वास्थ्य देखभाल पर बढ़ते खर्च, बढ़ती

पेंशन देनदारियों और संभावित श्रम की कमी शामिल हैं।

#### ■ गतहीन कृषि:

- कृषि क्षेत्र भारत की लगभग **46% आबादी को रोजगार** प्रदान करता है और भारत के सकल घरेलू उत्पाद में इसका योगदान लगभग 16.5% है।
- हालाँकि, अप्रभावी भूमि सुधारों, अवैज्ञानिक अभ्यासों, संस्थागत ऋण प्रवाह की कमी और जलवायु अनिश्चितताओं के कारण यह गतहीन एवं नमिन उत्पादक क्षेत्र बना हुआ है।

#### ■ वनरिमाण क्षेत्र का पछिड़ान:

- आर्थिक सर्वेक्षण **2023-24** के अनुसार, वनरिमाण क्षेत्र भारत के केवल **11.4%** कार्यबल को रोजगार प्रदान करता है।
- इसके अलावा, वनरिमाण क्षेत्र को उच्च इनपुट लागत और अस्थिर मांग के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

#### ■ अकुशल लॉजिस्टिक्स:

- आर्थिक सर्वेक्षण 2022-23 से पता चलता है कि भारत में लॉजिस्टिक्स लागत सकल घरेलू उत्पाद के **14-18% के बीच** है, जो वैश्विक **बैंचमार्क 8% से अधिक** है। इसके साथ ही, **लॉजिस्टिक प्रदर्शन सूचकांक (LPI) 2023 में भारत 38वें स्थान पर** है।

#### ■ रोजगारहीनता और प्रच्यन्न बेरोजगारी:

- आईटी सेवाओं में उछाल से प्रेरित भारत के उच्च विकास वर्षों (2000-10) के बावजूद **46% श्रम शक्ति** अभी भी कृषि में संलग्न है, जो **सकल घरेलू उत्पाद में केवल 18%** का योगदान देती है। इसकी उत्पादकता कम है और यह अल्प-रोजगार (underemployment) की समस्या से भी ग्रस्त है।
- इसके अलावा, CMIE के अनुसार भारत में बेरोजगारी दर **मई 2024 में 7% से तेजी से बढ़कर जून 2024 में 9.2%** हो गई।

#### ■ श्रम बल गतिशीलता:

- महिला श्रम बल भागीदारी मात्र **37%** है, हालाँकि वर्ष **2019 में 26% की तुलना** में इसमें सुधार हुआ है। फरि भी, यह स्तर अन्य तेजी से विकास करते देशों की तुलना में कम है।

#### ■ वैश्विक आर्थिक मंदी:

- वैश्विक आर्थिक मंदी, वस्तुओं की अस्थिर कीमतों, भू-राजनीतिक तनाव और कठिन होती वित्तीय स्थितियों नरियात में कमी **आयात लागत में वृद्धि तथा विकास परियोजनाओं** के लिये भरती एवं वित्तपोषण में कमी लाकर भारत के आर्थिक नविश विकास में बाधा उत्पन्न कर रही हैं।

## सरकार द्वारा कौन-से प्रमुख कदम उठाए गए हैं?

- **पूंजीगत व्यय में वृद्धि:** पछिले वर्ष की तुलना में वित्त वर्ष 24 में पूंजीगत व्यय (Capital Expenditure- CAPEX) में 28.2% की वार्षिक वृद्धि हुई है, जहाँ अवसंरचना विकास और नज्जि क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- **ऋण विकास:** अनुसूचति वाणज्यिक बैंकों द्वारा ऋण वितरण 20.2% की वृद्धि के साथ 164.3 लाख करोड़ रुपए तक पहुँच गया, जो व्यय में वृद्धि को दर्शाता है। इसके अलावा, **सकल गैर-नष्पिपादति परसिपत्त (GNPA)** अनुपात सुधरकर 2.8% हो गया, जो 12 वर्ष का न्यूनतम स्तर है।
- **अवसंरचनात्मक विकास:**
  - आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 के अनुसार राष्ट्रीय राजमार्गों के नरिमाण की गति वित्त वर्ष 2014 में **11.7 कमी प्रतिदिन** से बढ़कर वित्त वर्ष 2024 तक **34 कमी प्रतिदिन** हो गई है।
    - इसके अलावा, गति शक्ति योजना या **मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी योजना** के लिये राष्ट्रीय मास्टर प्लान को कार्यान्वति किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य **लॉजिस्टिक्स लागत को कम** करने के लिये अवसंरचनात्मक परियोजनाओं हेतु समन्वति योजना-नरिमाण एवं नष्पिपादन सुनिश्चति करना है।
- **राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन (National Monetisation Pipeline- NMP):** इसमें **चार वर्ष की अवधि (वित्त वर्ष 2022 से 2025)** में सड़क, रेलवे, बजिली, तेल एवं गैस पाइपलाइन, दूरसंचार, नागरिक उड्डयन जैसे क्षेत्रों में केंद्र सरकार की प्रमुख परसिपत्तियों को पट्टे/लीज पर देने के माध्यम से **6 लाख करोड़ रुपए** की कुल मुद्रीकरण क्षमता की परकिल्पना की गई है।
- **डजिटल इंडिया पहल:** इसका उद्देश्य डजिटल अवसंरचना विकास के माध्यम से राष्ट्रीय सशक्तीकरण करना, जीवन स्तर को ऊपर उठाना और पारदर्शति को बढ़ावा देना है।
- **राष्ट्रीय शकिषा नीति और 'सकलि इंडिया' मशिन:** सरकार गुणवत्तापूर्ण शकिषा प्रदान करने और देश की जनसांख्यिकी को कुशल बनाने के लिये इन पहलों को करयिनवति कर रही है।
- **प्रत्यक्ष लाभ प्रदान करना: प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (Direct Benefit Transfer- DBT)** और **जन धन योजना** से राजकोषीय दक्षता बढ़ी और 'लीकेज' कम हुआ, जिससे लोगों की व्यय क्षमता में वृद्धि हुई।
- **संवहनीयता और जलवायु प्रत्यासथता को बढ़ावा देना:** भारत **'पंचामृत'** लक्ष्यों और सौर मशिन तथा राष्ट्रीय पवन-सौर हाइड्रडि नीति जैसी अनेक योजनाओं के माध्यम से संवहनीय आर्थिक विकास को बढ़ावा दे रहा है।

## एक विकसित देश के रूप में भारत के लिये क्या चुनौतियाँ होंगी?

#### ■ आर्थिक भेद्यता:

- विकसित अर्थव्यवस्थाएँ वैश्विक वित्तीय प्रणालियों और बाजारों में अधिक एकीकृत होती हैं, जिससे वे अंतरराष्ट्रीय आर्थिक उतार-चढ़ाव के प्रतर्त अधिक संवेदनशील हो जाती हैं।
  - उदाहरण के लिये, विकसित देशों को वर्ष **2007-08 के सबप्राइम संकट** और **कोविड-19** मंदी के बाद अधिक आर्थिक आघातों का सामना करना पड़ा।
- जैसे-जैसे भारत आगे बढ़ेगा, उसे वैश्विक वित्तीय संकटों, व्यापार व्यवधानों और अंतरराष्ट्रीय कमोडिटी मूल्यों में बदलाव का अधिक सामना करना पड़ेगा।

- **जलवायु संवेदनशीलता में वृद्धि:**
  - भारत को एक विकसित राष्ट्र के रूप में जलवायु संबंधी मुद्दों को संबोधित करने के लिये अत्यधिक दबाव का सामना करना पड़ेगा। इसमें **अवसंरचना, कृषि और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन** के प्रभाव का प्रबंधन करना शामिल है।
  - अपनी विविध भौगोलिक स्थितियों के कारण भारत अनेक प्रकार के जलवायु जोखिमों (जैसे **गंभीर बाढ़, ग्रीष्म लहरें और चक्रवात शामिल**) के प्रति संवेदनशील है, जो आर्थिक स्थिरता और जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं।
- **रोज़गार वृद्धि:**
  - विकसित अर्थव्यवस्थाओं में **ऑटोमेशन, उद्योग की बदलती आवश्यकताओं और जनसांख्यिकीय परिवर्तनों** के कारण कभी-कभी रोज़गार सृजन की गति आर्थिक वृद्धि से पीछे रह जाती है। भारत को औद्योगिकीकरण और आधुनिकीकरण के विस्तार के साथ-साथ गतिहीन रोज़गार सृजन की संभावना को संबोधित करने की आवश्यकता होगी।
  - अर्थव्यवस्था में तीव्र तकनीकी प्रगति और संरचनात्मक परिवर्तनों के कारण कौशल असंतुलन उत्पन्न हो सकता है, जहाँ उपलब्ध **रोज़गार कार्यबल के कौशल के अनुरूप** नहीं होते हैं।
- **विवैश्वीकरण:**
  - **विवैश्वीकरण (Deglobalization)** का तात्पर्य वैश्विक व्यापार और निवेश पर निर्भरता कम करने की प्रवृत्ति से है, जो प्रायः संरक्षणवाद और व्यापार बाधाओं में वृद्धि की विशेषता रखता है। इसका असर भारत के निर्यात-उन्मुख क्षेत्रों और वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं पर पड़ सकता है।
  - वैश्विक व्यापार नीतियों में परिवर्तन और भू-राजनीतिक गतिशीलता में बदलाव अंतरराष्ट्रीय निवेश तथा व्यापार संबंधों के लिये अनिश्चितताएँ पैदा कर सकते हैं।

## आगे की राह:

- **औद्योगिक संकुलों का विकास:** सरकार को व्यापक सहायता प्रणालियों के साथ **औद्योगिक संकुलों (Industrial Clusters) का विकास कर अवसंरचनात्मक सुधार** के अपने प्रयासों को आगे बढ़ाना चाहिए।
  - **संकुल या क्लस्टर आधारित मॉडल**, जहाँ विशिष्ट क्षेत्रों में वनियमों में ढील दी जाती है, वनियमों के लिये अनुकूल वातावरण का निर्माण कर सकता है।
  - इसके अतिरिक्त, सरकार को उच्च टैरिफि के अधिरोपण से बचना चाहिए, जिससे स्थानीय निर्माताओं के लिये अलाभ की स्थिति बन सकती है और निर्यात प्रतिस्पर्द्धा में बाधा उत्पन्न हो सकती है।
- **विकास की गति को बनाए रखना:** वित्त वर्ष 2024 में भारत की वास्तविक **जीडीपी में 8.2%** की प्रभावशाली वृद्धि दर्ज की गई, जो चार में से तीन तमिहियों में 8% से अधिक रही। विकसित अर्थव्यवस्था का दर्जा हासिल करने के लिये भारत को इस मजबूत विकास प्रक्षेपवक्र को बनाए रखना होगा।
- **मध्यम-आय जाल को संबोधित करना और विकास सुनिश्चित करना:** भारत को मध्यम-आय जाल से बचने के लिये एक बाज़ार-आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकता है जो न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप के साथ निजी उद्यम का समर्थन करती हो। अर्थव्यवस्था का फोकस **कारोबार सुगमता (ease of doing business)** को बढ़ाने और आर्थिक सुधारों को जारी रखने पर होना चाहिए।
  - **वशिव बैंक** की **वशिव विकास रिपोर्ट 2024** के अनुसार नीतियों को **'3i' रणनीति** की ओर बढ़ने की आवश्यकता है, यानी **मध्यम-आय जाल से बचने** के लिये निवेश, प्रेरणा और नवाचार (Investment, Infusion, and Innovation)।
  - दक्षिण कोरिया **3i रणनीति के सभी तीन चरणों से गुज़रने** और इस विकास पथ पर आगे बढ़ने के मामले में एक उत्कृष्ट उदाहरण है।



**Governing**  
Reforms of political &  
economic institutions with  
remarkable policy continuity



**Including**  
Market economy with  
more jobs and higher  
wages



**Sustaining**  
Macroeconomic stability  
with inflation and debt  
under control



**Growing**  
Factor accumulation and  
technological improvement



**Connecting**  
Higher firm productivity and  
competitiveness through rapid  
international integration

//

- **अवसंरचना का वसितार:** परविहन, शहरी विकास और डजिटल अवसंरचना में नविश जारी रखने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय राजमार्गों और नए हवाई अड्डे टर्मिनलों के निर्माण की गति में वृद्धि एक सकारात्मक प्रवृत्ति को दर्शाती है।
  - **प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना** जैसी योजनाओं के माध्यम से ग्रामीण और शहरी संपर्क को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
- **वित्तीय क्षेत्र और मौद्रिक स्थिरता को बढ़ावा देना:** बैंकिंग क्षेत्र के स्वास्थ्य और वित्तीय मध्यस्थता को बढ़ाने की आवश्यकता है, जहाँ इसे दवाला एवं दवालायुपन संहिता (IBC) जैसे वधिक समर्थन प्राप्त हों।
- **कौशल विकास और रोजगार पर ध्यान केंद्रित करना :** शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण में नविश कर कौशल अंतराल को दूर किया जाए; बेहतर रोजगार परिणाम और उच्च कार्यबल भागीदारी का लक्ष्य रखा जाए।
  - अध्ययनों से पता चलता है कि कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से देश को व्यापक लाभ प्राप्त हो सकता है। IMF का सुझाव है कि भारत की महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर को पुरुषों के बराबर करने से भारत की जीडीपी में 27% की वृद्धि हो सकती है।
- **जनसांख्यिकीय लाभांश को साकार करना:** भारत की कार्यशील आयु जनसंख्या की क्षमता को साकार करने के लिये नमिन-कुशल, रोजगार-गहन वनिरिमाण क्षेत्र रोजगार अवसरों की आवश्यकता है। दक्षिण कोरिया और वियतनाम जैसे 'एशियन टाइगर्स' द्वारा ऐसी ही रणनीतियाँ अपनाई गई हैं।
- **विविधता और वसितार:** फार्मास्यूटिकल्स और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे प्रमुख उद्योगों में वृद्धि का समर्थन करना जारी रखें। **वैविकि बाज़ार हसिसेदारी** को और बढ़ाने के लिये सेवाओं में भारत की शक्ति का लाभ उठाएँ।
- **नवाचार को बढ़ावा देना: स्टार्ट-अप और गगि अर्थव्यवस्था** के विकास को प्रोत्साहित किया जाए, जो नए व्यापार मॉडल और तकनीकी उन्नति को आगे बढ़ाने के लिये आवश्यक है।
- **हरति संक्रमण:** स्वच्छ ऊर्जा और संवहनीय अभयासों में नविश की वृद्धि की जाए। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का वसितार जारी रखते हुए ऊर्जा आवश्यकताओं में अनुमानित वृद्धि को संबोधित किया जाए।

## नषिकर्ष

चूँकि भारत का लक्ष्य वर्ष 2047 तक एक विकसित देश बनना है, इसलिये उसे केवल आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय समग्र विकास सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। इसका अर्थ है कि न केवल आर्थिक कारकों बल्कि सामाजिक, पर्यावरणीय और संस्थागत कारकों पर भी ध्यान देना होगा। भारत नमिनलखिति तरीकों से समग्र विकास सुनिश्चित कर सकता है:

- **जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिये बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और कौशल विकास** के माध्यम से मानव पूंजी में नविश करना।
- संवहनीय और न्यायसंगत विकास को बढ़ावा देना जिससे आय असमानता कम हो और सभी को अवसर मिले।
- **जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता हानि और संसाधनों** की कमी से निपटने के लिये पर्यावरणीय पहलुओं को विकास योजनाओं में एकीकृत करना।
- समावेशी और पारदर्शी नरिणय प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिये **लोकतांत्रिक संस्थाओं, शासन व्यवस्था और वधि** के शासन को मज़बूत करना।
- एक विविध अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना जो विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करे, न कि केवल कुछ उद्योगों पर निर्भर रहे।

- भारत एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाकर संतुलित और सतत विकास प्राप्त कर सकता है जो उसके नागरिकों के समग्र कल्याण को बढ़ावा देगा।

**अभ्यास प्रश्न:** वर्ष 2047 तक विकास अर्थव्यवस्था बनने की दशा में आगे बढ़ते हुए भारत को गतहीन रोजगार सृजन और कौशल असंतुलन को संबोधित करने के लिये क्या उपाय करने चाहिये? रोजगार के अवसरों को बढ़ाने में शिक्षा सुधार, व्यावसायिक प्रशिक्षण और उभरते उद्योगों के लिये समर्थन की भूमिका पर चर्चा कीजिये।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

**??????????:**

**प्रश्न.** नरिपेक्ष तथा प्रतव्यक्तवास्तवकि GNP में वृद्धिआर्थकि विकास की ऊँची स्तर का संकेत नहीं करती, यदि: (2018)

- औद्योगकि उत्पादन कृषिउत्पादन के साथ-साथ बढ़ने में वफिल रह जाता है।
- कृषिउत्पादन औद्योगकि उत्पादन के साथ-साथ बढ़ने में वफिल रह जाता है।
- नरिधनता और बेरोजगारी में वृद्धिहोती है।
- नरियात की अपेक्षा आयात तेज़ी से बढ़ता है।

**उत्तर: (c)**

**प्रश्न:** भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में FDI की आवश्यकता की पुष्टि कीजिये। हस्ताक्षरति समझौता-ज्जापनों तथा वास्तवकि FDI के बीच अन्तर क्यों है? भारत में वास्तवकि FDI को बढ़ाने के लिये सुधारात्मक कदम सुझाइये। (2016)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/navigating-india-s-path-to-a-30-trillion-economy-by-2047>

